आचार्य नरेन्द्रदेव : एक परिचय

डॉ.श्रीमति प्रियंका शर्मा
सहायक प्राध्यापक,
राजनीति विज्ञान विभाग
संत अलॉयसियस महाविद्यालय,
जबलपुर (म.प्र.)

प्रस्तावना

आचार्य नरेद्रदेव राष्ट्र की महान विभूति थे, वह युग पुरूष थे, संसार के दूसरे युग पुरूषों की तरह अपनी पीढी का प्रतिनिधित्व करते हुए अपनी पीढी की अकांक्षाओं को प्रतिबिम्बित करते थे। उनका जीवन व व्यक्तित्व समाज में समरस था। उन पर समाज की , अवस्था की , युग की प्रेरणाओं और चिन्तन की छाप थी। उनके जीवन पर ज्ञान और परिस्थिति के स्थिर तत्त्वों से कहीं अधिक उनके प्रगतिशील तत्त्वों और क्रान्तिकारी सम्भावनाओं का प्रभाव था। बहुजन समाज की आकांक्षाओं की पूर्ति के लिए प्रगतिशील तत्वों का समुचित प्रयोग ही उनके अध्ययन, चिन्तन और मनन का विषय तथा जीवन का उद्देश्य था। सामाजिक विचारको द्वारा उनके कृतित्व एवं सामाजिक योगदान का समुचित आकलन अभी नही हो सका है।आचार्यजी के व्यक्तित्व और विद्वत्ता को निकट से जानने पहचानने वालों ने ठीक ही कहा है कि आचार्य जी प्राचीन और साहित्य के उन गिने हुए विद्वानों में से थे जिनकी संख्या उत्तरोत्तर कम होती जा रही है।

मूल शब्द(Key words) : आचार्य नरेद्रदेव, राष्ट्रीय आन्दोलन, राष्ट्रीय एकीकरण, समाजवाद

आचार्य जी भारतीय समाजवाद के उद्घोषक भी थे तथा अपने चिन्तन के द्वारा जनमानस तक पहुँचने वाले व्याख्याता भी। उन्होंने समाजवाद को मानवतावाद पर आधारित किया तथा उन्होंने मानवतावादी पक्ष पर अधिक बल दिया। नरेन्द्रदेव मार्क्स को एक महान समाज वैज्ञानिक मानते थे, परन्तु उनका मानना था कि मार्क्स को प्राच्य– जगत की सामाजिक संस्थाओं और परम्पराओं का पर्याप्त ज्ञान नहीं था जिससे वो एशियाई देशों के लिए उपयुक्त व्यवस्थाएँ कर सकें।

आचार्य जी ने समाजवादी क्रान्ति को संहार नहीं निर्माण के रूप में और समाजवाद को एक विश्वव्यापी आन्दोलन के रूप में देखा। उन्होने एशिया और भारत में राष्ट्र की शक्ति और उनके चरित्र को पहचाना। वे जीवन पर्यन्त मानव विकास की नई मंजिल पर नव संस्कृति एवं नव समाज की रचना का स्वप्न साकार करने में लगे रहे। इतने बड़े काम के लिए उनमें अपेक्षित बौद्विक प्रतिभा और चरित्र बल दोनो थे। वे निर्वैर्य पुरूष और निर्भीक विचारक थे।

अपने युग के प्रतिनिधि पुरूष–

आचार्य नरेन्द्रदेव के व्यक्तित्व एवं कृतिव के चित्रण के लिए जैसा शब्द– शिल्प, वाक – कौशल, तुलिका तथा स्थान चाहिए वह दुर्लभ है। भारतीय राजनीति के उद्यान में नरेन्द्रदेव जी ऐसे वटवृक्ष के रूप में प्रकट हुए जिसकी छाया राष्ट्रीय राजनीति पर समय–समय पर पड़ती रही। उनका दर्शन मूलतः गाँधीवादी तथा

मार्क्सवादी तत्त्वों की क्रिया तथा प्रक्रिया का परिणाम था। तिलकवादी राष्ट्रीयता के साँचे में ढला हुआ उनका व्यक्तित्व कई दशकों तक भारतीय महाद्वीप में अपना आलोक बिखेरता रहेगा।

जीवनवृत--

18 वीं शताब्दी के अन्त तक पूर्ण भारत पर अंग्रजों का प्रभुत्व स्थापित हो चुका था। पाश्चात्य सभ्यता का प्रभाव भारत पर पड़ना आरम्भ हो चुका था। 1887 में भारत ने ब्रिटीश साम्राज्य को स्थापित करने का असफल प्रयास किया। 19 वी शताब्दी में भारतीय राष्ट्रीय कॉंग्रेस की स्थापना ए. ओ. ह्यूम के नेतृत्व में कुछ भारतीय शिक्षितों ने की। इसका उद्देश्य एक ऐसे संगठन का निर्माण था जो भारत की समस्याओं को ब्रिटिश सरकार के समक्ष प्रस्तुत कर सकें। भारत की ऐसी ही राजनीतिक और सामाजिक पृष्ठभूति में 30, अक्टूबर 1889 को सीतापुर में आचार्य नरेन्द्रदेव का जन्म हुआ । इनका वास्तविक नाम अविनाशी लाल था।पं माधव प्रसाद मिश्र ने इनका नाम नरेन्द्रदेव रखा।उन पर अपने पिताजी का स्पष्ट प्रभाव यह पड़ा की उन्हें भारतीय संस्कृति से प्यार हो गया। दस वर्ष की उम्र में उनका यज्ञोपवित संस्कार सम्पन्न हुआ। बचपन में नरेन्द्रदेव जिन व्यक्तियों के सम्पर्क में आये उनमें प्रथम प. मदन मोहन मालवीय थे। नरेन्द्रदेव जी की प्रतिभा पर रीझ कर मालवीय जी ने उन्हें दसवीं पास कर प्रयाग के हिन्दू छात्रावास में रहकर पढ़ने के लिए आमन्त्रित किया। यहाँ नरेन्द्रदेव के राजनैतिक विचार तेजी से बनने लगे। उस समय बंग– भंग और रूस, जापान, युद्ध के कारण विद्यार्थियों में बहुत जोश था। हिन्दू बोर्डिंग हाउस उग्र विचारों का केन्द्र बन गया था। इस वतावरण के प्रभाव से नरेन्द्रदेव जी गरम दल के साथ हो गये। अध्ययन के लिए उन्हें प्रयाग में पाँच वर्ष रहना पड़ा 1906 से 1911 तक वे प्रयाग में रहे। उनके छात्र जीवन का एक वर्ष चेचक के कारण व्यर्थ चला गया। इसलिए 12 वीं व बी.ए. की परीक्षा में उन्हें चार की जगह पाँच वर्ष लगे। प्रयाग के उन वर्षो में डॉ. गंगानाथ झा तथा लोकमान्य तिलक की उन पर गहरी छाप पड़ी, जिसने एक ओर उनमें भारतीय संस्कृति के प्रति अनुराग को जन्म दिया तो दूसरी ओर उग्रवाद को प्रज्ज्वलित किया।

नरेन्द्रदेव के हृदय में जगा भारतीयों के प्रति अनुराग उन्हें अध्ययन हेतु क्विन्स कॉलेज ले गया, जहाँ उन्होने एम.ए. की कक्षा में प्रवेश लिया पिताजी उन्हें उपेन वकालत में लगाना चाहते थे। अतः प्रयाग से एल.एल.बी. की डिग्री प्राप्त करने के पश्चात् वे वकालात करने फैजाबाद लौट आए।नरेन्द्रदेव का विवाह उनके विद्यार्थी जीवन में ही 1904 में बिहार के नगर गया में हुआ। किन्तु जब वे प्रयाग में वकालत की शिक्षा प्राप्त कर रहे थे, तभी उनकी पत्नि का निधन हो गया। फैजाबाद में वकालत की प्रेक्टीस प्रारम्भ करने के दो तीन वर्ष पश्चात् माता–पिता के आग्रह पर 1917 में उनका विवाह आगरा शहर निवासिनी प्रेमादेवी के साथ हुआ। दसरे विवाह से नरेन्द्रदेव जी को दो पुत्र एवं तीन पुत्रियाँ हुई। पुत्रों के नाम क्रमशः अशोक और हर्षवधर्न तथा पुत्रियों के सरोज, सुषमा एवं दीपा रखे गए।

सन् 1907 में क्राँग्रेस में फूट पड़ जाने के बाद, लगभग नौ साल तक गरम दल के लोग कॉंग्रेस से अलग रहे। गरम दल के नेता अपने विचारों के कार्य कत्ताओं की एक राष्ट्रीय कान्फ्रेन्स कायम करना चाहते थे। पर सरकार ने आपस की फूट का लाभ उठाकर गरम दल को छिन्न – भिन्न कर दिया, कई नेतोओं को जेल भेज दिया। इस तरह सन्1914 ई. तक देश की राजनीति की गति मन्द रही, पर सन् 1914 ई. में यूरोप में प्रथम विश्व युद्ध शुरू हुआ इसने देश की राजनीति में नई गति पैदा कर दी। गरम दलीय और क्रान्तिकारी विचारों ने फिर जोर पकडा । युद्ध के कुछ महिने पहले लोकमान्य तिलक 6 वर्ष तक मांडले जेल में रहने के बाद मुक्त हुह, उधर श्रीमती ऐनीबिसेण्ट ने देश की राजनीति में रूचि लेनी शुरू की । दोनेा ने सन् 1916 ई. में होमरूल लीग कर स्थापना की।सन् 1916 ई. में ही संयुक्त प्रान्त में श्रीमती

ऐनीबिसेन्ट द्वारा स्थापित होमरूप लीग की शाखा बनी, और नरेन्द्रदेव जी ने उसकी एक शाखा फैजाबाद में खोली वह उनके मन्त्री चुने गये। इस तरह नरेन्द्रदेव जी होमरूल लीग तथा क्राँग्रेस के माध्यम से राष्ट्र सेवा करते रहे।

प्रारम्भ से ही आचार्य नरेन्द्रदेव जी का जीवन अत्यन्त सादा था। स्वदेश व्रत के व्रती आचार्य नरेन्द्रदेव जी ने जीवन पर्यन्त स्वयं भी खादी के वस्त्र और अपने परिवार वालों को भी खादी वस्त्र पहनने की सलाह देते रहे। आचार्य नरेन्द्रदेव जी की पत्नि प्रेमा देवी ने आजीवन खादी वस्त्र ही धारण किये।आचार्य नरेन्द्रदेव जी एक बहुत ही स्नेही व्यक्ति थे वकालत के समय में उनक सभी वकी साथियों से मधुर सम्बन्ध थे। वे सर्वथा अपने से बड़ो का आदर करते तथा समवयस्क साथियों से स्नेह करते थे।

अवध में किसान आन्दोलन और आचार्य नरेन्द्रदेव –

आचार्य नरेन्द्रदेव ने फैजाबाद जिले में किसान आन्दोलन का नेतृत्व किया। किसानों का साथ देत हुए उनकी माँगों का समर्थन किया, कार्यकत्ताओं को अपने– अपने काम पर डटे रहने के लिए प्रोत्साहित किया, सरकार के समर्थकों द्वारा बनाई अमन सभाओं के भ्रामक प्रचार का भाण्डा फोड़ते हुए स्वराज की पुष्टि की एवं किसानों की माँगों के समर्थन में कई प्रभावशाली व्याख्यान दिये। इन व्याख्यानों की चर्चा सम्पूर्ण अवध में फैल गई और आचार्य नरेन्द्रदेव जी एक प्रख्यात वक्ता के रूप में जाने व पहचाने जाने लगे।

सरकार किसानों के आन्दोलन को दबा देना चाहती थी, परन्तु जब उसने देखा कि आन्दोलन आसानी से दबने वाला नहीं है तब इस भय सेकि किसान काँग्रेस द्वारा संचालित असहयोग आन्दोंलन में शरीक न हो जाये, उसने किसानों को बेदखली वाली बात मान ली।

2. आचार्य नरेन्द्रदेव का काशी विद्यापीठ में आगमन –

असहयोग आन्दोंलन की पताका हाथ में लिए जवाहरलाल नेहरू जब 27 फरवरी सन्1921 ई. को अकबरपुर (फैजाबाद) के किसानों की सभा में पहुँचे उनकी दृष्टि नरेन्द्रदेव जी पर पड़ी। नेहरू जी को काशी में विद्यापीठ की स्थापना के बाद तथा उनके लिए नरेन्द्रदेव जी की उपयोगिता याद आयी। नेहरू जी ने नरेन्द्रदेव जी से काशी जाकर विद्यापीठ में अध्यापन कार्य करने को कहा, जो आचार्य जी ने सहर्ष स्वीकार कर लिया। आचार्य नरेन्द्रदेवज के अन्तरमन की अभिलाषा सदा सरस्वती तथा राजनीति के विद्यालयों में बैठकर ज्ञानर्जन तथा सेवा साधना की रही थी। इस दृष्टिकोण से उनके जीवन का जितना अंश काशी विद्यापीठ में बीता उससे अधिक सुखमय अंश उनके लिए कोई नहीं था।

काशी विद्यापीठ पहुँचकर आचार्य जी बाबु श्री प्रकाश जी के सम्पर्क में आये। यह सम्बन्ध कालान्तर में उनके जीवन का एक अभिन्न अंग बन गया। नरेन्द्रदेव जी के आचार्य की उपाधि का उद्भव श्रीप्रकाश जी के ही वाग्ड्य से हुआ था। वह ही आगे चलकर उनके तथा महात्मा गाँधी के बीच प्रगाढ़ संबंध के सेतु बने थे। उनकी विद्यापीठ की अध्यक्षता छोडने पर सन् 1926 ई. में आचार्य नरेन्द्रदेव जी उसके अध्यक्ष हुए थे। विद्यापीठ के काम में उनका मन लग गया, और लगभग दस वर्ष तक वहीं रहकर वे राजनीति का कार्य और पठन–पाठन करते रहे।

मुख्यतः विद्यापीठ के माध्यम से ही वे राष्ट्र की सेवा करते रहे। उन्होंने विद्यापीठ के कुलपति के पद को भी वर्षो सुशोभित किया। वहीं नरेन्द्रदेव जी ने अपने ज्ञान को परिपक्व किया तथा उच्चकोटि के

विचारक और राजनीतिज्ञ की क्षमता प्राप्त की। वहाँ ही उन्होंने बौद्ध दर्शन, उपनिषद तथा एशिया की क्रान्ति की हलचलों का भी अध्ययन किया। वहाँ ही उन्होंने विद्वता, मानवता और कर्त्तव्य परायणता से बहुत से नवयुवक कार्यकर्त्ताओं को देश सेवा के योग्य बनाया।

सन्1919 ई. में जलियावाला बाग नरमेध के बाद देश में प्रतिवर्ष अप्रैल के दूसरे सप्ताह में राष्ट्रीय सप्ताह मनाया जाने लगा था। काशी विद्यापीठ में प्रतिवर्ष यह सप्ताह मनाया जाता था, और आचार्य नरेन्द्रदेव इसके कार्यक्रमों में बड़े मनोयोग से भाग लिया करते थे।

आचार्य नरेन्द्रदेव जी को सन् 1921 ई. मे प्रान्तीय कॉंग्रेस कमेटी का सदस्य बनाया गया। 'इण्डिपेन्डेण्ट' नामक समाचार पत्र के 21 जून 1921 ई. के अंक में प्रकाशित समाचार के अनुसार पं मोतीलाल नेहरू प्रान्तीय कॉंग्रेस कमेटी के अध्यक्ष निर्वाचित हुए और कार्यकारिणी में फैजाबाद मण्डल का प्रतिनिधित्व करने के लिए आचार्य नरेन्द्रदेव तथा गोपल सहाय को सदस्य बनाया गया।

सन् 1926 ई. का वर्ष नरेन्द्रदेव जी के जीवन में बड़ा महत्त्व रखता है। उस वर्ष वह डॉ. भगवानदास के स्थान पर काशी विद्यापीठ के अध्यक्ष हुए थे। उसी वर्ष उत्तर प्रदेश कॉंग्रेस कमेटी का कार्यालय प्रयाग से चलकर काशी पहुँचा तथा काशी विद्यापीठ से संचालित होने लगा। उसी वर्ष समाजवादी संस्कृति से अभिभूत पं. जवाहरलाल नेहरू से उनका निकट सम्पर्क हुआ। सन् 1926 ई. ने उन्हें उस प्रकार समय के उस चौराहे पर ले जाकर खड़ा किया, जहाँ से उन्हें शिक्षा तथा शिक्षण के अतिरिक्त राजनीति की ओर ले जाने वाला मार्ग दिखाई पड़ा। सन् 1929 ई. में 26 सितम्बर को काशी विद्यापीठ के दीक्षान्त समारोह में अध्यक्षता करने के लिए काशी पहुँचे गाँधी जी ने कहा था– '' नरेन्द्रदेव वो रत्न है जिन्हें बहुत पहले ही जान लेना चाहिए था।

3. अप्रतिम विद्वान –

आचार्य नरेन्द्रदेव जी आदर्श शिक्षक थे। उन्हें अनेक देशों के इतिहास और अनेक युगों के दर्शन युगों के दर्शन का उच्चतम् ज्ञान था। वह जिस विषय को पढाते थे उसे वे इतना स्पष्ट, रोचक और सुगम बनाकर प्रस्तु करते थे कि विद्यार्थी उसका अर्थ सरलता से ग्रहण कर सके। इतिहास को पढाते समय वह अतीत की धुंधली परिस्थितियों और ऐतिहासिक पात्रों को जीवित वास्तविकताओं के रूप में प्रस्तुत कर देते थे। भारत के राष्ट्रीय आन्दोलन के इतिहास का सजीव चित्र वे एशिया के संधर्षों और आर्थिक परिस्थितियों की पार्श्वभूति में खींचते और एशिया के विभिन्न स्वतन्त्रता संधर्षों पर व्याख्यान देते समय वे राष्ट्रीय भावना से ऐसे अनुप्रमाणित हो जाते और उनकी वाणी में ऐसा चमत्कार पैदा हो जाता कि जिससे उनके श्रोताओं को ज्ञान के साथ– साथ राष्ट्र सेवा की सद्प्रेरणा भी प्राप्त होती।

नरेन्द्रदेव जी एक आदर्श शिक्षक के साथ–साथ कुशल प्रबंधक थे। उनका प्रबंधशील और कर्त्तव्य परायणता पर आधृत था। उसमें नम्रता और दृढ़ता का समन्वय था। वह अधिकार के दम्भ और अहंकार से शून्य था। प्रशासन की अकड़ क बजाय कर्त्तवयशील व्यवहार ही उसका मूलाधार था। संस्था के अध्यक्ष की हैसियत से नरेन्द्र देव जी विद्यार्थियों के प्रशिक्षण का तथा कार्यालय के काम का विशेषतः हिसाब का समुचित निरीक्षण करते रहते थे। वे दसरे अध्यापकों को जितना प्रशिक्षण का कार्य सौंपते उससे कहीं अधिक स्वयं करते और आशा करते कि वे सब अपना कार्य ठीक ढ़ग से करेगे। वे व्यवहार में अत्यन्त कोमल के साथ– साथ अनुशासन में दृढ़ थे।

आचार्य नरेन्द्रदेव जी के लिए विद्यापीठ एक कुटुम्ब के समान था। अध्यापक, विद्यार्थी, कार्यकर्त्ता सभ से उनके मधुर संबंध थे। वे विद्यार्थियों के मानव व्यक्तित्व का करते और उनसे बहुत प्रेम करते थे। वे उनके शिक्षक ही नहीं मित्र और मार्ग– दर्शक भी थे। उन्हीं से सबको नेतृत्त्व मिलता था, प्रेरणा मिलती थी, साहस और उत्साह मिलता था।

अपने पिताजी की मृत्यु के कारण आचार्य नरेन्द्रदेव जी अपने घर फैजाबाद चले गये। वहाँ से आने के पश्चात् वह सन् 1930 ई. तक नियमपूर्वक विद्यापीठ में कार्य करते रहे। नमक सत्याग्रह के सिलसिले में 1930 ई. वह इलाहाबाद के बाबू पुरूषोत्तम दास टण्डन तथा काशी के बाबू शिवप्रसाद गुप्त के साथ बस्ती में गिरफ्तार हुए, जहाँ दण्डित होकर उनको तीन माह कारवास में रहना पड़ा कारावास में ही उन्हें दमा जैसी जानलेवा बीमारी लग गयी। और बार में वह उसी रोग से जीवन पर्यन्त जूझते रहे।

4. अन्तिम यात्रा –

3, जनवरी सन् 1956 को दमे के स्वास्थ लाभ के लिए आचार्य परेन्दुराई गए। आचार्य जी डेढ़ माह वहाँ रहे परन्तु स्वास्थ्य में स्थायी सुधार न हो सका। परेन्दुराई में वे अपने साथ बौद्ध दर्शन की पुस्तकें लेते गए और अपनी पुस्तक " बौद्ध धर्म दर्शन" के शेष भाग को समाप्त करने का प्रयत्न करते रहे।

5, फरवरी को प्रेस ट्रस्ट ऑफ इण्डिया के प्रतिनिधि द्वारा बम्बई की घटनाओं के समाचार नरेन्द्रदेव जी ने सविस्तार सुने तथा विहल हो गये। कारण कि आचार्य जी बम्बई को मराठी भाषी महाराष्ट्र का अंग समझते थे, उसके लिए संयुक्त महाराष्ट्र आन्दोलन की माँग उन्हें सही प्रतीत होती थी।

12,फरवरी को परेन्दुराई से दूर कोयम्बटूर में प्रजा सोशलिस्ट पार्टी की बैठक बुलाई गई जिसमें आचार्य जी की इच्छानुसार श्री गंगाशरण जी को डिप्टी चैयरमेन चुना गया। इसी बीच आचार्य जी का स्वास्थ्य बिगड़ता चला गया, जब पाँच दिन तक कोई सुधार नहीं हुआ तब वह इरोड चले गए। इरोड में 19 फरवरी 1956 ई. को इस मनीषी ने संसार से महाप्रयाण किया और अपने पीछे एक अपूरणीय क्षति छोड़ गये।

निष्कर्ष

आज दुनिया निश्चित रुप से विनाश के कगार पर खडी है, जिससे उसकी रक्षा करना कठिन दिखाई दे रहा है। सतत् वैचारिक संघर्ष जातीय द्वेष इसके प्रमुख कारणों में से है जिसके परिणामस्वरुप भयानक युध्द छिड सकते हैं।ऐसी सूरत में मानव जाति को अपने अस्तित्व की रक्षा के लिए नैतिकता को चुनना आवश्यक है।आचार्य नरेन्द्र देव हमें उसी दिशा में जाने का संकेत करते हैं। वे नैतिकता की प्रतिमूर्ति हैं। यह कोई नई दिशा नहीं है परंतु यह वह दिशा है जिसे या तो दुनिया भूल गई है या जिस पर चलने का साहस नहीं कर पा रही। है। आचार्य नरेन्द्र देव हमारे समक्ष श्रेष्ठ विकल्प है जिनके सिध्दांतों को अपनाकर हम एक स्वच्छ राजनीतिक वातावरण निर्मित कर सकते हैं।

–––––इति–––––

संदर्भ ग्रंथ सूची

1 आचार्य नरेन्द्र देव, राष्ट्रीयता और समाजवाद, ज्ञानमंडल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. 15–16
2 ए. अप्पादोराय, इंडियन पॉलिटिकल थीकिंग इन द ट्वेन्टीयथ सेन्चुरी, कलकत्ता, 1971, पृ. 45
3 रिपोर्ट ऑफ द सेकण्ड नेशनल कॉन्फ्रेन्स ऑफ द प्रजा सोशलिस्ट गया (गया,1955)